केन्दीयसक्कतविस्सविज्जालयो (Central Sanskrit University)

बोद्धदस्सनपालिविज्जासाखा (Deptt. of Bauddhadarshan & Pali)

एम.ए. (पालि) दुतियवस्सस्स पाठचरिया (Syllabus of M.A. Pali IInd Year)

संवग्गो	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. दुतियवस्सं	ततियसत्तं	DSCC-24	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. विद्यार्थियों को पालि काव्य-परम्परा, विशेषतः आचार्य मेधङ्कर विरचित *जिनचरित* के स्वरूप, साहित्यिक वैशिष्ट्य एवं पालि वाङ्मय में उसके महत्त्व से परिचित कराना। 2. *जिनचरित* में वर्णित बुद्धचरित, बोधिसत्त्व के पूर्वजन्मों, पारमिताओं, बुद्धत्व-प्राप्ति तथा धर्मप्रवर्तन से सम्बन्धित प्रमुख प्रसंगों का ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं साहित्यिक अध्ययन कराना। 3. ग्रन्थ में प्रयुक्त छन्द, अलंकार, रस, प्रकृतिवर्णन तथा काव्य-शिल्प की विशेषताओं का विश्लेषण कर विद्यार्थियों में पालि काव्य-सौन्दर्य की सम्यक् समझ विकसित करना। 4. मूल पालि पाठ के अध्ययन एवं व्याख्या के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषिक दक्षता, काव्य-विश्लेषण तथा बौद्ध आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन करने की क्षमता विकसित करना।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
Central Sanskrit University
Lucknow Campus

			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी पालि काव्य-साहित्य की परम्परा, *जिनचरित* के स्वरूप, विषयवस्तु तथा महाकवि मेधङ्कर के साहित्यिक योगदान की व्याख्या एवं मूल्यांकन कर सकेंगे। 2. विद्यार्थी *सुमेधकथा, पारमीकथा, बुद्ध-दीपङ्कर-कथा, सम्बोधिकथा, धम्मचक्कप्पवत्तनकथा* तथा अन्य चयनित प्रसंगों के माध्यम से बोधिसत्त्व-आदर्श एवं बौद्ध सिद्धान्तों की व्याख्या एवं समालोचनात्मक विवेचना कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी *जिनचरित* में प्रयुक्त छन्द, अलंकार, रस एवं काव्यगत अभिव्यक्ति की विशेषताओं का विश्लेषण कर पालि काव्यशास्त्रीय परम्परा का मूल्यांकन कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- 1. आचार्य मेधंकर कृत **जिनचरितं**, आर.एन. प्रसाद, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2004 2. महाकवि-वनरतन-मेधङ्कर-विरचितं **जिनचरितं**, सम्पादको - सिद्धार्थ सिंह, पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी, 2007			
			- पालिकब्बसाहिच्चपरम्परा - जिनचरितस्स परिचयो विसेसतायो च - कथावस्तु - निदानकथा, दूरेकथा, अविदूरेकथा, सन्तिकेकथा - छन्द-अलंकार-रस-पकतिवण्णनादि	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			- महाकवि-वनरतन-मेधङ्करस्स परिचयो तस्स कब्बपटिभा च निदानकथा - मङ्गलाचरणं (गाथा 1-2) - बुद्धगुणपसंसा (गाथा 3-4) - जिनचरितज्झयनफलं (गाथा 5-7) दूरेकथा - अमरनगरवण्णना (गाथा 8-10) - सुमेधकथा (गाथा 11-19) - नेक्खम्मकथा (गाथा 20-22) - तपाचरणं (गाथा 32-33) - बुद्ध-दीपङ्कर-कथा (गाथा 34-45) - अभिनीहारकथा (गाथा 46-53) - भविस्सवचो (गाथा 54-56) - मुदितो सुमेधो (गाथा 57-62) पारमीकथा (गाथा 63-69)			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			अविदूरेकथा - पटिसन्धिकथा (गाथा 70-72) - जातिकथा (गाथा 73-97) - कालदेवल-तापस-कथा (गाथा 119-128) - लक्खणकथा (गाथा 142-143) - राहुल-जाति-सन्देसो (गाथा 150-154) - अभिनिक्खमणकथा (गाथा 160-171) निग्गमनकथा (गाथा 194-202)	1	2	16-20
			- राजगहकथा (गाथा 207-211) - सुजाताकथा (गाथा 212-219) - बोधिमण्डकथा (गाथा 220-221, 230-235) - मारविजयकथा (गाथा 242-265) - सम्बोधिकथा (गाथा 268-271) सन्तिकेकथा - सत्तसत्ताहकथा (गाथा 272-280) ब्रह्मयाचनकथा (गाथा 281-285, 291-303)	1	3	16-20

			- धम्मचक्कप्पवत्तनकथा (गाथा 306-321) - राजगहब्भागमनकथा (गाथा 324-335) - सक्यब्भागमनकथा (गाथा 343-355, 367-372) - यसोधराकथा (गाथा 394-397) - जेतवनकथा (गाथा 406-418, 423-431) निगमनं (गाथा 459-460)	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

संवग्गो	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. दुतियवस्सं	ततियसत्तद्धं	DSCC-25	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. विद्यार्थियों को *दीघनिकाय* के स्वरूप, संरचना तथा उसमें निहित *ब्रह्मजालसुत्त*, *कूटदन्तसुत्त*, *लक्खणसुत्त* एवं *सिंगालसुत्त* के साहित्यिक, दार्शनिक एवं सामाजिक महत्त्व से परिचित कराना। 2. *ब्रह्मजालसुत्त* के माध्यम से शील, मिथ्यादृष्टियों तथा दार्शनिक मतों का सम्यक् अध्ययन कर बौद्ध दृष्टिकोण की विश्लेषणात्मक समझ विकसित करना। 3. *कूटदन्तसुत्त*, *लक्खणसुत्त* एवं *सिंगालसुत्त* के अध्ययन द्वारा बौद्ध नैतिकता, कर्मसिद्धान्त, महापुरुष-लक्षणों तथा गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों का समग्र बोध कराना। 4. मूल पालि पाठ के अध्ययन एवं व्याख्या के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषिक दक्षता, दार्शनिक विवेचन तथा बौद्ध शिक्षाओं की समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी *दीघनिकाय* तथा उसमें संगृहीत *ब्रह्मजालसुत्त*, *कूटदन्तसुत्त*, *लक्खणसुत्त* एवं *सिंगालसुत्त* की संरचना, विषयवस्तु एवं महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. विद्यार्थी *ब्रह्मजालसुत्त* में प्रतिपादित चूळशील, मज्झिमशील, महासील, मिथ्यादृष्टियों तथा दृष्टिवादों का विश्लेषण कर उनके दार्शनिक आधार एवं बौद्ध प्रतिपादन का मूल्यांकन कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी *कूटदन्तसुत्त* में वर्णित यज्ञ की अवधारणा, नैतिक मूल्यों तथा बौद्ध दृष्टिकोण की व्याख्या करते हुए वैदिक एवं बौद्ध परम्पराओं के तुलनात्मक पक्षों का विवेचन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी *लक्खणसुत्त* में वर्णित द्वात्रिंशत् महापुरुषलक्षणों तथा उनके कर्मजन्य आधार का विश्लेषण कर बौद्ध परम्परा में उनके दार्शनिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व को समझ सकेंगे। 5. विद्यार्थी *सिंगालसुत्त* में प्रतिपादित गृहस्थधर्म, सामाजिक उत्तरदायित्व, मित्र-विवेक तथा षड्दिशा-पूजन की अवधारणा का अध्ययन कर बौद्ध नैतिक शिक्षाओं की समकालीन प्रासंगिकता एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग का विवेचन कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- **दीघनिकायपालि**, सम्पादको-स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2021			
			ब्रह्मजालसुत्तं - (1) सुप्पियपरिब्बाजकवत्थु (2) सीलमत्तकं - (क) चूळसीलं, (ख) मज्झिमसीलं, (ग) महासीलं। (3) मिच्छादिट्ठिट्ठानानि (4) दिट्ठियो तण्हागतानं विप्फन्दितमेव (5) दिट्ठियो फस्सपच्चया नेतं ठानं विज्जति	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			(6) दिट्ठिगतिकसंसारवट्टं (7) दिट्ठिजालं			
			कूटदन्तसुत्तं - (1) खाणुमतकब्राह्मणेहि कूटदन्तस्स सल्लापो (2) तिविधं यञ्ञसम्पदं सोळसपरिक्खारं (3) सप्पितेलादिना यञ्ञदिट्ठानं (4) महानिसंसतरा यञ्ञा (5) कूटदन्तस्स उपासकत्तपटिवेदना	1	2	16-20
			लक्खणसुत्तं - **(1) द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि -** **(2) इमस्स कम्मस्स कटत्ता इदं लक्खणं -** (1) सुप्पतिट्ठितपादतालक्खणं, (२) पादतलचक्कलक्खणं, (३-५) आयतपण्हितादितिलक्खणं, (६) सत्तुस्सदतालक्खणं, (७-८) करचरणमुदुजालतालक्खणानि, (९-१०) उस्सङ्खपादउद्धग्गलोमतालक्खणानि,	1	3	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			(११) एणिजङ्घलक्खणं, (१२) सुखुमच्छविलक्खणं, (१३) सुवण्णवण्णलक्खणं, (१४) कोसोहितवत्थगुय्हलक्खणं, (१५-१६) परिमण्डलअनोनमजण्णुपरिमसनलक्खणानि, (१७-१९) सीहपुब्बद्धकायादितिलक्खणं, (२०) रसग्गसग्गितालक्खणं, (२१-२२) अभिनीलनेत्तगोपखुमलक्खणानि, (२३) उण्हीससीसलक्खणं, (२४-२५) एकेकलोमताउण्णालक्खणानि, (२६-२७) चत्तालीसअविरळदन्तलक्खणानि, (२८-२९) पहूतजिव्हाब्रह्मस्सरलक्खणानि, (३०) सीहहनुलक्खणं, (३१-३२) समदन्तसुसुक्कदाठालक्खणानि			
			सिंगालसुत्तं - (1) सिंगालको गहपतिपुत्तो (2) एवं छ दिसा नमस्सितब्बा	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			(3) अमित्ता मित्तपतिरूपका वेदितब्बा (4) मित्ता सुहदा वेदितब्बा (5) छ दिसापटिच्छादनं			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

संवग्गो	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. दुतियवस्सं	ततियसत्तद्धं	DSCC-26	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. विद्यार्थियों को आचार्य बुद्धघोष विरचित *विसुद्धिमग्ग* के स्वरूप, उद्देश्य, संरचना तथा बौद्ध साधना-साहित्य में उसके विशिष्ट स्थान एवं महत्त्व से परिचित कराना। 2. *सीलनिद्देस* के अध्ययन के माध्यम से शील के स्वरूप, लक्षण, प्रयोजन, प्रकार तथा बौद्ध आचार-दर्शन में उसकी आधारभूत भूमिका की सम्यक् समझ विकसित करना। 3. पातिमोक्खसंवर, इन्द्रियसंवर, आजीवपारिशुद्धि एवं पच्चयसन्निस्सित शील के सिद्धान्तों तथा उनकी साधना-पद्धति का दार्शनिक एवं व्यावहारिक अध्ययन कराना। 4. मूल पालि पाठ के अध्ययन एवं व्याख्या के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिधार्मिक एवं नैतिक अवधारणाओं के विश्लेषण, शील-साधना के व्यावहारिक पक्ष तथा बौद्ध नैतिक मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन करने की क्षमता विकसित करना।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी *विसुद्धिमग्ग* तथा उसके *सीलनिद्देस* की संरचना, विषयवस्तु एवं बौद्ध साधना-परम्परा में उसके महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे। 2. विद्यार्थी शील के स्वरूप, लक्षण, प्रयोजन, लाभ तथा उसके विभिन्न भेदों का विश्लेषण कर बौद्ध नैतिक दर्शन में उसकी भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी पातिमोक्खसंवरशील, इन्द्रियसंवरशील, आजीवपारिशुद्धिशील एवं पच्चयसन्निस्सितशील के सिद्धान्तों तथा उनकी शुद्धि-सम्पादन विधियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं व्याख्या कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी परियन्तपारिशुद्धिशील, अपरियन्तपारिशुद्धिशील, परिपूर्णपारिशुद्धिशील, अपरामट्ठपारिशुद्धिशील तथा पटिप्पस्सद्धिपारिशुद्धिशील की अवधारणाओं का विश्लेषण कर उनके साधनात्मक एवं दार्शनिक महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- बुद्धघोसाचरियविरचितो **विसुद्धिमग्गो** (सीलनिद्देसो), सम्पादको- स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2018			
			- विसुद्धिमग्गस्स परिचयो - विसुद्धिमग्गकारस्स बुद्धघोसस्स परिचयो निदानादिकथा, सीलसरूपं,	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			केनट्ठेन सीलं, सीलस्स लक्खणादीनि, सीलनिसंसं, सीलप्पभेदो			
			पातिमोक्खसंवरसीलं, इन्द्रियसंवरसीलं, आजीवपारिसद्धिसीलं, पच्चयसन्निस्सितसीलं	1	2	16-20
			पातिमोक्खसंवरसुद्धिसम्पादनविधि, इन्द्रियसंवरसुद्धिसम्पादनविधि, आजीवपारिसुद्धिसम्पादनविधि, पच्चयसन्निस्सितसीलसम्पादनविधि	1	3	16-20
			परियन्तपारिसुद्धिसीलं, अपरियन्तपारिसुद्धिसीलं, परिपुण्णपारिसुद्धिसीलं, अपरामट्ठपारिसुद्धिसीलं, पटिप्पस्सद्धिपारिसुद्धिसीलं	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

संवग्गो	सत्तङ्कं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. दुतियवस्सं	ततियसत्तङ्कं	DSCC-27	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** 1. विद्यार्थियों को *कच्चायनव्याकरण* एवं *बालावतार* के आधार पर पालि व्याकरण की मूलभूत संरचना, विशेषतः सन्धि एवं नाम-प्रकरण के सिद्धान्तों से परिचित कराना। 2. सरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि, निग्गहीतसन्धि तथा बोमिस्सकसन्धि के नियमों का व्यवस्थित अध्ययन कर विद्यार्थियों में पालि शब्दरचना एवं ध्वन्यात्मक परिवर्तन की सम्यक् समझ विकसित करना। 3. पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, सर्वनामिक तथा सङ्ख्यासब्दों के रूपों एवं प्रयोगों का अध्ययन कर भाषा-प्रयोग, रूपविश्लेषण तथा वाक्य-निर्माण की क्षमता का विकास करना। 4. पालि, हिन्दी एवं अंग्रेज़ी के मध्य अनुवाद-अभ्यास तथा व्यवहारिक पालि शब्दावली के प्रयोग के माध्यम से विद्यार्थियों में शुद्ध भाषा-प्रयोग, त्रिकालिक वाक्य-रचना एवं प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करना।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
Central Sanskrit University
Lucknow Campus

अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) :

1. विद्यार्थी पालि सन्धि के विभिन्न प्रकारों—सरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि, निग्गहीतसन्धि एवं बोमिस्सक-सन्धि—के नियमों की व्याख्या कर उनका शुद्ध प्रयोग कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, सर्वनामिक तथा सङ्ख्यासम्बन्धी शब्दरूपों का विश्लेषण एवं उचित वाक्य-सन्दर्भों में उनका प्रयोग कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी पालि व्याकरण के सिद्धान्तों के आधार पर शब्दरूपों, सन्धियों एवं वाक्यों का भाषिक विश्लेषण तथा व्याकरणिक परीक्षण कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी पालि से हिन्दी/अंग्रेज़ी तथा हिन्दी/अंग्रेज़ी से पालि में शुद्ध एवं सुसंगत अनुवाद करते हुए व्यवहारिक पालि शब्दावली का प्रभावी उपयोग कर सकेंगे।
5. विद्यार्थी व्यवहारिक पालि शब्दों की सहायता से वर्तमान, भूत एवं भविष्य—तीनों कालों में शुद्ध वाक्य-रचना, लेखन तथा भाषिक संप्रेषण की दक्षता का प्रदर्शन कर सकेंगे।

आधारगन्थो-

1. **कच्चायनव्याकरणं,** सम्पादका- लक्ष्मीनारायण तिवारी बीरबलशर्मा च, तारा बुक एजेन्सी, वारणसी, 1989

2. महासामिधम्मकीत्तिप्पणीतं **बालावतारं** (सन्धिप्पकरणं, नामप्पकरणं), सम्पादको- स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2007

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			सन्धिप्पकरणं 1. सञ्ञापकरणं, - सरसन्धि, - ब्यञ्जनसन्धि, - निग्गहीतसन्धि, - बोमिस्सकसन्धि	1	1	16-20
			नामप्पकरणे पुल्लिङ्गसद्दा	1	2	16-20
			नामप्पकरणे इत्थीलिङ्गसद्दा, नामप्पकरणे नपुंसकलिङ्गसद्दा, नामप्पकरणे सब्बनामिकसद्दा, नामप्पकरणे सङ्खासद्दा	1	3	16-20
			अनुवादो – - पालितो हिन्दियं/आंग्ले - हिन्दीतो/आंग्लतो पालि (वोहारिकपालिसद्दानं साहाय्येन तिसु कालेसु वाक्यसंरचना)	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

		AEEC-5 UGC NET/JRF, 2nd Paper 83 Code (Pali)	**पाठ्यक्रम उद्देश्य** (Course Objectives) : 1. विद्यार्थियों को यूजीसी-नेट/जेआरएफ (पालि) परीक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप तिपिटक, अभिधम्म, अट्ठकथा, वंस एवं पालि काव्य-साहित्य की प्रमुख अवधारणाओं एवं मूल ग्रन्थों का समग्र एवं व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करना। 2. पालि ग्रन्थों में वर्णित बुद्धजीवन, बौद्ध संगीतियों, त्रिपिटक साहित्य, अभिधम्मीय सिद्धान्तों तथा अट्ठकथा-परम्परा का समन्वित अध्ययन कर विषय की ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं साहित्यिक समझ विकसित करना। 3. बौद्ध दर्शन की आधारभूत अवधारणाओं—जैसे अरियसच्च, आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग, प्रतित्यसमुत्पाद, तिलक्षण, कर्मवाद, ब्रह्मविहार, बोधिपक्षीय धर्म आदि—का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उच्चस्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं एवं शोध के लिए आवश्यक वैचारिक क्षमता का विकास करना। 4. विद्यार्थियों में पालि साहित्य के विविध आयामों का तुलनात्मक अध्ययन, अवधारणात्मक स्पष्टता, विश्लेषणात्मक चिन्तन तथा वस्तुनिष्ठ एवं वर्णनात्मक परीक्षा-पद्धति के अनुरूप उत्तर-लेखन कौशल विकसित करना।
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी बुद्धजीवन, प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय बौद्ध संगीतियों तथा त्रिपिटक के प्रमुख ग्रन्थों एवं उनकी विषयवस्तु की सम्यक् व्याख्या एवं विश्लेषण कर सकेंगे।

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. विद्यार्थी विनयपिटक, सुत्तपिटक एवं अभिधम्मपिटक के आधारभूत सिद्धान्तों, *अभिधम्मत्थसंगह*, *धम्मसंगणी* तथा संबंधित साहित्य की प्रमुख अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन एवं मूल्यांकन कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी अट्ठकथा-साहित्य, आचार्य बुद्धदत्त, आचार्य बुद्धघोष, आचार्य धम्मपाल, वंस-साहित्य तथा पालि काव्य-परम्परा के योगदान एवं ऐतिहासिक महत्त्व का समालोचनात्मक विवेचन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी अरहन्त, बोधिसत्त्व, पच्चेकबुद्ध, सम्मासम्बुद्ध, शील, समाधि, प्रज्ञा, ब्रह्मविहार, आर्यसत्य, आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग, तिलक्षण, प्रतित्यसमुत्पाद, कर्मवाद, बोधिपक्षीय धर्म, निर्वाण, नीवरण, संयोजन, हेतु एवं आसव जैसी प्रमुख बौद्ध अवधारणाओं की व्याख्या तथा अनुप्रयोग कर सकेंगे। 5. विद्यार्थी समेकित पालि अध्ययन के आधार पर यूजीसी-नेट/जेआरएफ तथा अन्य उच्चस्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं के अनुरूप विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का प्रभावी ढंग से समाधान करने तथा शोधोन्मुख अध्ययन के लिए आवश्यक शैक्षणिक दक्षताओं का प्रदर्शन कर सकेंगे।
			आधार-गन्था- 1. सुत्तपिटके मज्झिमनिकायपालि (पठमो भागो), अनुवादको-स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2021

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. सुत्तपिटके दीघनिकायपालि (दुतियो भागो), अनुवादको-स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2009 3. अंगुत्तर-निकायपालि (भाग 1), अनुवादको-स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2002 4. महावंस, अनुवादको-स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्ध आकर ग्रन्थमाला, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, 1996 5. विनयपिटक (चुल्लवग्ग), अनुवादको-स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2021 6. पातिमोक्खसुत्त (भिक्खुपातिमोक्ख), अनुवादको-स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2006 7. मज्झिमनिकाय (महावग्ग) अनुवादको-स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2009 8. अभिधम्मत्थसंगहो (पठम-भागो), सम्पादको-प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2002 9. अभिधम्मत्थसंगहो (दुतिय-भागो), सम्पादको-प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2002 10. धम्मसंगणी (निक्खेपकण्डं अभिधम्ममातिका), सम्पादको-भिक्खु जगदीश काश्यप, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, 2017 11. पालि साहित्य का इतिहास, आचार्य भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2013

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			12. NET/JRF/SET (PALI) [Paper-2] Ven. Nitesh Vardhan, Samrat Harshavardhan Buddha Vihar, Prayag Raj (UP), 2023			
			1. पालिगन्थेसु आधारितं बुद्धजीवनचरितं 1.1 अरियपरियेसनसुत्तं/पासरासिसुत्तं (मज्झिमनिकायो) 1.2 महापरिनिब्बानसुत्तं (दीघनिकायो) 2. पठम-दुतिय-ततिय-संगीतयो 2.1 महावंसो (ततियपरिच्छेदो) - पठमधम्मसंगीति 2.2 महावंसो (चतुत्थपरिच्छेदो) - दुतियधम्मसंगीति 2.3 महावंसो (पंचमपरिच्छेदो) - ततियधम्मसंगीति	1	1	16-20
			विनयपिटकं 1.1 विनयपिटकस्स परिचयो 1.2 चूळवग्गे कम्मखन्धको 1.3 पातिमोक्खं 2. सुत्तपिटकं 2.1 सुत्तपिटकस्स परिचयो	1	2	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2.2 मज्झिमनिकाये सतिपट्ठानसुत्तं 2.3 अंगुत्तरनिकायस्मिं एककनिपाते 2.3.1 नीवरणप्पहाणवग्गो 2.3.2 अकम्मनीयवग्गो			
			अभिधम्मपिटकं 1.1 अभिधम्मपिटकस्स सम्बद्धसाहिच्चस्स च परिचयो 1.2 अभिधम्मत्थसंगहो - चित्तं, चेतसिकं, रूपं निब्बानं च 1.3 धम्मसंगणी - तिकमातिका दुकमातिका च 2. अट्ठकथासाहिच्चं 2.1 अट्ठकथासाहिच्चस्स परिचयो 2.2 अट्ठकथाकारानं परिचयो - आचरियो बुद्धदत्तो, - आचरियो बुद्धघोसो - आचरियो धम्मपालो	1	3	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			वंससाहिच्चस्स परिचयो 2. पालि-कब्बसाहिच्चस्स परिचयो 3. सोगतदस्सनस्स अवधारणायो - अरहं, बोधिसत्तो, पच्चेकबुद्धो, सम्मासम्बुद्धो, सीलं, समाधि, पञ्ञा, ब्रह्मविहारो, अरियसच्चं, अरिय-अट्ठंगिको मग्गो, तिलक्खणं, पटिच्चसमुप्पादो, कम्मवादो, बोधिपक्खियधम्मा, निब्बानं, नीवरणं, संयोजनं, हेतु आसवो च	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

संवग्गो	सत्तङ्कं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. दुतियवस्सं	ततियसत्तङ्कं	ECA-2	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** तिपिटकेतर पालि साहित्य के इतिहास का मुख्य उद्देश्य छात्रों को तिपिटक बाह्य पालि साहित्य से परिचय कराना है। पालि के अट्ठकथा-टीका-अनुटीका साहित्य, वंस साहित्य, काव्य एवं काव्यशास्त्र व छन्दःशास्त्र, तथा पालि व्याकरणशास्त्रीय परम्परा का परिचय देना इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है। विशेष रूप से- 1. त्रिपिटकेतर साहित्य के अन्तर्गत अट्ठकथा, टीका और अनुटीका साहित्य के ग्रन्थों का परिचय और उनकी उपयोगिता को समझाना। साथ ही महान् अट्ठकथाकारों के विषय में जानकारी प्रदान करना। 2. वंस साहित्य का परिचय प्रदान करना तथा उनके ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्त्व को प्रकट करना। 3. प्रमुख वंस ग्रन्थों का परिचय प्रदान करना।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			4. त्रिपिटकेतर पालि काव्य साहित्य का परिचय प्रदान करना तथा पालि के छन्दःशास्त्र व काव्यशास्त्र की जानकारी प्रदान करना। 5. पालि के शिलालेखीय एवं पाण्डुलिपि साहित्य का परिचय देना। 6. पालि की महती व्याकरणशास्त्रीय परम्परा पर प्रकाश डालना।
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : पाठ्यक्रम के समापन पर छात्र निम्नलिखित योग्यताएँ प्राप्त करेंगे: 1. विद्यार्थी त्रिपिटकेतर साहित्य की संरचना और दार्शनिक महत्व को समझ सकेंगे। 2. बुद्धघोष, बुद्धदत्त और धर्मपाल जैसे विद्वानों के योगदान को जान सकेंगे। 3. वंस-साहित्य, काव्य-साहित्य, व्याकरण-साहित्य, त्रिपिटकेतर साहित्य के वैश्विक प्रभाव और अनुवाद की भूमिका को जानेंगे।
			आधारगन्थो- 1. **पालि साहित्य का इतिहास** - भिक्षु धर्मरक्षित, ज्ञानमण्डल प्रा. लि., वाराणसी, 1971 2. **पालि साहित्य का इतिहास** - महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020 3. **पालि साहित्य का इतिहास** - भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2000

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
			अट्ठकथा और टीका साहित्य - अट्ठकथा साहित्य का परिचय एवं विवरण। - आचार्य बुद्धघोष, आचार्य बुद्धदत्त और आचार्य धम्मपाल का योगदान; अन्य अट्ठकथाकार। - टीका साहित्य का परिचय। - अट्ठकथा एवं टीका साहित्य का महत्त्व।	1	1	16-20
			वंस साहित्य - वंस साहित्य का परिचय। - महावंस एवं दीपवंस का परिचय। - सद्धम्मसंगहो का परिचय एवं महत्त्व। - वंस साहित्य की विषयवस्तु एवं उनका सांस्कृतिक व ऐतिहासिक स्रोतों के रूप में महत्त्व।	1	2	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			पालि काव्य, काव्यशास्त्र एवं छन्दःशास्त्र - पालि काव्य साहित्य का परिचय एवं सर्वेक्षण। - पालि छन्दःशास्त्र 'वुत्तोदय' एवं अलंकारशास्त्र 'सुबोधालंकार'। - सद्धम्मोपायन का परिचय एवं वैशिष्ट्य। - पालि का अभिलेख एवं पाण्डुलिपि साहित्य।	1	3	16-20
			पालि व्याकरणशास्त्रीय परम्परा - पालि व्याकरणशास्त्रीय परम्परा का परिचय एवं विकासक्रम। - कच्चायन व्याकरण एवं उसका उपकारी साहित्य। - मोग्गलान व्याकरण एवं इस सम्प्रदाय के ग्रन्थ। - सद्दनीति व्याकरण एवं इस सम्प्रदाय के ग्रन्थ।	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
Central Sanskrit University
Lucknow Campus

संवग्गो	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. दुतियवस्सं	चतुत्थसत्तद्धं	DSCC-28	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** 1. विद्यार्थियों को *थेरगाथा* एवं *थेरीगाथा* के स्वरूप, संरचना, साहित्यिक वैशिष्ट्य तथा पालि बौद्ध साहित्य में उनके ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व से परिचित कराना। 2. चयनित थेरों एवं थेरियों की गाथाओं के अध्ययन के माध्यम से उनके जीवनानुभव, वैराग्य, साधना, निर्वाण-प्राप्ति तथा बौद्ध संघ में उनके योगदान की सम्यक् समझ विकसित करना। 3. *थेरगाथा* एवं *थेरीगाथा* में प्रतिपादित बौद्ध नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक आदर्शों तथा सामाजिक एवं मानवीय दृष्टिकोण का साहित्यिक एवं दार्शनिक विश्लेषण कराना। 4. मूल पालि गाथाओं के अध्ययन एवं व्याख्या के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषिक दक्षता, काव्य-बोध, दार्शनिक चिन्तन तथा बौद्ध शिक्षाओं की समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन करने की क्षमता विकसित करना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी *थेरगाथा* एवं *थेरीगाथा* की संरचना, विषयवस्तु, साहित्यिक विशेषताओं तथा पालि काव्य-साहित्य में उनके महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. विद्यार्थी काळुदायि, अङ्गुलिमाल, आनन्द, महाकच्चायन, सुनीत तथा अञ्ञासिकोण्डञ्ञ आदि थेरों की गाथाओं का ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं दार्शनिक विश्लेषण कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी अम्बपाली, महापजापति, उप्पलवण्णा, पटाचारा, किसागोतमी, खेमा एवं सुजाता आदि थेरियों की गाथाओं के माध्यम से बौद्ध संघ में महिलाओं की भूमिका तथा उनके आध्यात्मिक योगदान का समालोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी चयनित गाथाओं में निहित वैराग्य, अनित्य, दुःख, निर्वाण, साधना एवं आत्मानुशासन जैसे बौद्ध सिद्धान्तों की व्याख्या कर उनके दार्शनिक एवं नैतिक महत्त्व का विवेचन कर सकेंगे। 5. विद्यार्थी मूल पालि गाथाओं का अध्ययन कर उनकी भाषिक, काव्यात्मक एवं भावात्मक विशेषताओं का विश्लेषण करते हुए उनमें निहित बौद्ध जीवन-मूल्यों एवं मानवीय आदर्शों का समकालीन सन्दर्भों में अनुप्रयोग कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- **थेरगाथापालि एवं थेरीगाथापालि**, पालि-अध्ययन-केन्द्रम्, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, लखनऊ-परिसरः, 2012			
			थेरगाथा - थेरगाथाय परिचयो - काळुदायिथेरगाथा, - अंगुलिमालथेरगाथा, - आनन्दथेरगाथा	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			थेरगाथा - महाकच्चायनत्थेरगाथा, - सुनीतत्थेरगाथा, - अञ्ञासिकोण्डञ्ञत्थेरगाथा	1	2	16-20
			थेरीगाथा - थेरीगाथाय परिचयो - अम्बपालिथेरीगाथा, - महापजापतिथेरीगाथा, - उप्पलवण्णाथेरीगाथा, पटाचाराथेरीगाथा,	1	3	16-20
			थेरीगाथा - किसागोतमीथेरीगाथा, - खेमाथेरीगाथा, - सुजाताथेरीगाथा,	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

संवग्गो	सत्तद्धं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. दुतियवस्सं	चतुत्थसत्तद्धं	DSCC-29	**पाठ्यक्रम उद्देश्य** (Course Objectives) : 1. विद्यार्थियों को *सुत्तपिटक* तथा *संयुत्तनिकाय* के स्वरूप, संरचना, विषयवस्तु एवं पालि बौद्ध साहित्य में उसके दार्शनिक और साहित्यिक महत्त्व से परिचित कराना। 2. *देवतासंयुत्त, कोसलसंयुत्त, निदानसंयुत्त, अभिसमयसंयुत्त, धातुसंयुत्त, अनमतग्गसंयुत्त* तथा *कस्सपसंयुत्त* के चयनित सुत्तों के माध्यम से बौद्ध सिद्धान्तों, नैतिक मूल्यों एवं साधनात्मक शिक्षाओं की सम्यक् समझ विकसित करना। 3. चयनित सुत्तों में प्रतिपादित श्रद्धा, मैत्री, प्रतित्यसमुत्पाद, संसार की अनादिता, सन्तोष तथा अन्य प्रमुख बौद्ध अवधारणाओं का ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं व्यावहारिक विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना। 4. मूल पालि पाठ के अध्ययन एवं व्याख्या के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषिक दक्षता, सुत्त-साहित्य के आलोचनात्मक अध्ययन तथा बौद्ध शिक्षाओं की समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन करने की योग्यता विकसित करना।			
			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी *सुत्तपिटक* एवं *संयुत्तनिकाय* की संरचना, विषयवस्तु तथा पालि बौद्ध साहित्य में उनके महत्त्व की व्याख्या एवं विश्लेषण कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			2. विद्यार्थी *जटासुत्त, सद्धासुत्त, मित्तसुत्त, पियसुत्त, मल्लिकासुत्त* तथा *यञ्ञसुत्त* आदि चयनित सुत्तों में प्रतिपादित नैतिक एवं दार्शनिक शिक्षाओं का समालोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी *विभङ्गसुत्त, पठम-अस्सुतवासुत्त, नखसिखासुत्त* तथा *चङ्कमसुत्त* के आधार पर प्रतित्यसमुत्पाद, साधना एवं बौद्ध दार्शनिक अवधारणाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी *तिणकट्ठसुत्त, अस्सुसुत्त, पब्बतसुत्त, सासपसुत्त, गंगासुत्त* तथा *सन्तुट्ठसुत्त* के माध्यम से संसार की अनादिता, जीवन-दृष्टि एवं सन्तोष के बौद्ध सिद्धान्तों का मूल्यांकन कर उनके व्यावहारिक महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे। 5. विद्यार्थी चयनित मूल पालि सुत्तों का अध्ययन कर उनकी भाषिक विशेषताओं, दार्शनिक आशयों एवं नैतिक शिक्षाओं की व्याख्या करते हुए उन्हें समकालीन सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक सन्दर्भों में अनुप्रयुक्त कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- 1. संयुत्तनिकायपालि (पठमो भागो), अनुवादको-स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2024 2. संयुत्तनिकायपालि (दुतियो भागो), अनुवादको-स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्धभारती, वाराणसी, 2022			
			1. सुत्तपिटकस्स परिचयो 2. संयुत्तनिकायस्स परिचयो	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			1. सगाथवग्गे देवतासंयुत्ते (जटासुत्तं, सद्धासुत्तं, मच्छरिसुत्तं (I), मित्तसुत्तं, कविसुत्तं) 2. कोसलसंयुत्ते (पियसुत्तं, मल्लिकासुत्तं, यञ्ञसुत्तं)	1	2	16-20
			1. निदानसंयुत्ते बुद्धवग्गे विभङ्गसुत्तं, 2. निदानसंयुत्ते महावग्गे पठम-अस्सुतवासुत्तं, 3. अभिसमयसंयुत्ते नखसिखासुत्तं, 4. धातुसंयुत्ते चङ्कमसुत्तं	1	3	16-20
			1. अनमतग्गसंयुत्ते तिणकट्ठसुत्तं 2. अनमतग्गसंयुत्ते अस्सुसुत्तं 3. अनमतग्गसंयुत्ते पब्बतसुत्तं 4. अनमतग्गसंयुत्ते सासपसुत्तं 5. अनमतग्गसंयुत्ते गंगासुत्तं 6. कस्सपसंयुत्ते सन्तुट्ठसुत्तं	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

<table>
<tr><th>संवग्गो</th><th>सत्तद्धं</th><th>पत्तसङ्केतो</th><th>पाठचरियाविवरणं</th><th>क्रेडिट</th><th>यूनिट</th><th>होरा</th></tr>
<tr><td rowspan="2">एम.ए. दुतियवस्सं</td><td rowspan="2">चतुत्थसद्धं</td><td rowspan="2">DSCC-30</td><td>पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :
1. विद्यार्थियों को अभिधम्मपिटक, विशेषतः धम्मसङ्गणी के निक्खेपकण्ड एवं अभिधम्ममातिका के स्वरूप, संरचना तथा बौद्ध अभिधम्म परम्परा में उनके महत्त्व से परिचित कराना।
2. तिकमातिका एवं दुकमातिका के आधार पर अभिधम्मीय वर्गीकरण-पद्धति तथा मानसिक एवं नैतिक तत्त्वों के वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विश्लेषण की समझ विकसित करना।
3. हेतु, आसव, संयोजन, गन्थ, ओघ, योग, नीवरण, परामास, उपादान एवं किलेस आदि अभिधम्मीय अवधारणाओं का व्यवस्थित अध्ययन कर बौद्ध मनोविज्ञान एवं दर्शन की गहन समझ विकसित करना।</td><td rowspan="2"></td><td rowspan="2"></td><td rowspan="2"></td></tr>
<tr><td>अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) :
1. विद्यार्थी अभिधम्मपिटक एवं धम्मसङ्गणी की संरचना, विषयवस्तु तथा बौद्ध अभिधम्म साहित्य में उनके स्थान एवं महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी तिकमातिका एवं दुकमातिका के आधार पर धम्मों के वर्गीकरण तथा अभिधम्मीय विश्लेषण-पद्धति का समालोचनात्मक अध्ययन एवं विवेचन कर सकेंगे।</td></tr>
</table>

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			3. विद्यार्थी हेतुगोच्छक, आसवगोच्छक, संयोजनगोच्छक, गन्थगोच्छक, ओघगोच्छक, योगगोच्छक एवं नीवरणगोच्छक में प्रतिपादित अवधारणाओं का विश्लेषण कर उनके पारस्परिक सम्बन्धों एवं दार्शनिक महत्त्व का मूल्यांकन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी परामासगोच्छक, उपादानगोच्छक, किलेसगोच्छक एवं पिट्ठिदुक में निहित अभिधम्मीय सिद्धान्तों की व्याख्या कर बौद्ध मनोविज्ञान एवं साधना-पद्धति में उनके व्यावहारिक महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे। 5. विद्यार्थी चयनित मूल पालि पाठ का अध्ययन कर उसकी भाषिक, दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक विशेषताओं की व्याख्या करते हुए अभिधम्मीय अवधारणाओं का शोध, अध्यापन तथा समकालीन बौद्ध अध्ययन में प्रभावी अनुप्रयोग कर सकेंगे।			
			आधारगन्थो- धम्मसङ्गणिपालि (निक्खेपकण्डं अभिधम्ममातिका), सम्पादको- भिक्खु जगदीसकस्सपो, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, विहार, 2017			
			अभिधम्मपिटकस्स परिचयो - धम्मसंगणिगन्थस्स परिचयो तिकानि, हेतुगोच्छकं	1	1	16-20

			आसवगोच्छकं, सञ्ञोजनगोच्छकं	1	2	16-20
			गन्थगोच्छकं, ओघगोच्छकं, योगगोच्छकं, नीवरणगोच्छकं	1	3	16-20
			परामासगोच्छकं, उपादानगोच्छकं, किलेसगोच्छकं, पिट्ठिदुकं	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

संवग्गो	सत्तङ्कं	पत्तसङ्केतो	पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
एम.ए. दुतियवस्सं	चतुत्थसत्तङ्कं	AEEC-1	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** 1. विद्यार्थियों को पालि पाण्डुलिपि-विज्ञान, भारतीय पाण्डुलिपि-परम्परा तथा तिपिटक के विभिन्न लिपियों में संरक्षण एवं नागरी लिपि में लिप्यन्तरण के इतिहास से परिचित कराना। 2. ताड़पत्र, भुर्जपत्र, सांचीपत्र, ताम्रपत्र, पाषाणलेख, कागजलेख एवं अन्य पाण्डुलिपि-रूपों के अध्ययन के माध्यम से पाण्डुलिपियों के स्वरूप, संरक्षण एवं ऐतिहासिक महत्त्व की सम्यक् समझ विकसित करना। 3. धम्मलिपि (ब्राह्मी), सिंहली, बर्मी, थाई, रोमन एवं नागरी लिपियों के परिचय के साथ-साथ अशोक के अभिलेखों, शिलालेखों एवं स्तम्भलेखों के अध्ययन द्वारा भारतीय अभिलेखीय परम्परा एवं बौद्ध सांस्कृतिक विरासत का बोध कराना। 4. विद्यार्थियों में पाण्डुलिपि-संग्रह, पाठ-सम्पादन, पाठ-समालोचन, प्रूफ-रीडिंग, लिप्यन्तरण एवं पाठालोचन की वैज्ञानिक पद्धतियों का व्यावहारिक ज्ञान विकसित कर शोध एवं सम्पादन कार्य के लिए आवश्यक दक्षताओं का निर्माण करना।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी पालि पाण्डुलिपि-विज्ञान की मूल अवधारणाओं, पाण्डुलिपियों के प्रकारों तथा तिपिटक के लिप्यन्तरण एवं संरक्षण की ऐतिहासिक प्रक्रिया की व्याख्या कर सकेंगे। 2. विद्यार्थी सिंहली, बर्मी, थाई, धम्मलिपि (ब्राह्मी), रोमन एवं नागरी लिपियों की मूलभूत विशेषताओं की पहचान कर उनके आधार पर पालि पाण्डुलिपियों एवं अभिलेखों का प्रारम्भिक अध्ययन एवं लिप्यन्तरण कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी सम्राट् अशोक के शिलालेखों, लघुशिलालेखों, स्तम्भलेखों एवं गुहालेखों की विषयवस्तु, भौगोलिक वितरण तथा उनके ऐतिहासिक एवं वैश्विक महत्त्व का विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर सकेंगे। 4. विद्यार्थी पाण्डुलिपि-संग्रहालयों, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, पाण्डुलिपि-प्राप्ति के स्रोतों तथा पाठ-सम्पादन, पाठभेद, पाठदोष, प्रूफ-संशोधन एवं पाठालोचन की प्रक्रियाओं का समालोचनात्मक अध्ययन एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग कर सकेंगे। 5. विद्यार्थी पालि पाण्डुलिपियों एवं मुद्रित ग्रन्थों के सम्पादन, प्रूफ-रीडिंग, लिप्यन्तरण तथा पाठ-समालोचन की मानक विधियों का अनुसरण करते हुए शोधोन्मुख एवं अकादमिक सम्पादन कार्य की आधारभूत दक्षताओं का प्रभावी प्रदर्शन कर सकेंगे।

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
Central Sanskrit University
Lucknow Campus

आधार-ग्रन्थ-

1. पाण्डुलिपि विज्ञान, डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2013
2. शोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008
3. Introduction to Manuscriptology, R.S. Shivaganesha Murthy, Sharda Publishing House, Delhi
4. Introduction to Indian Textual Criticism, S.M. Katre, Karnataka Publishing House, Bombay
5. The Fundamentals of Manuscriptology, P. Visalakshy, Dravidian Linguistics Association. 84, Thiruvananthapuram
6. सम्राट् अशोक के अभिलेख, विपस्सना विशोधन विन्यास, ईगतपुरी, 2013
7. अशोक के धर्मलेख, जनार्दन भट्ट, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, नई दिल्ली, 2015

पाठचरियाविवरणं	क्रेडिट	यूनिट	होरा
पालि पाण्डुलिपि विज्ञान एवं लिपि-परिचय (i) पालि पाण्डुलिपि परिचय एवं तिपिटक के नागरी लिपि में लिप्यन्तरण का सामान्य इतिहास	1	1	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshatra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभागाध्यक्ष
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			(ii) पाण्डुलिपियों के विविध प्रकार (ताड़पत्र लेख, भुर्जपत्र-लेख, सांचीपत्र, ताम्रपत्र, पाषाणलेख, कागजलेख, धातुलेख इत्यादि) (iii) पालि पाण्डुलिपियों का सामान्य सर्वेक्षण (सिंहली, बर्मी एवं थाई लिपियों में प्राप्त पालि-पाण्डुलिपियों के विशेष सन्दर्भ में) (iv) लिपि-परिचय एवं लिपि का स्वरूप [धम्मलिपि (ब्राह्मी-लिपि), सिंहली, बर्मी, थाई, रोमन एवं नागरी लिपियों के विशेष सन्दर्भ में] (v) सिंहल-लिपि-परिचय			
			अशोक के अभिलेख एवं धम्मलिपि (ब्राह्मी-लिपि) परिचय (i) शिलालेख का अर्थ, परिचय एवं इतिहास (ii) अशोक के शिलालेखों, लघुशिला लेखों, स्तम्भलेखों एवं गुहालेखों की विषयवस्तु (iii) अशोक के अभिलेखों की भौगोलिक स्थिति (iv) सम्राट् अशोक के शिलालेखों का वैश्विक महत्त्व (v) धम्मलिपि (ब्राह्मी लिपि) परिचय	1	2	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

			पालि-पाण्डुलिपि अध्ययन तथा बर्मी लिपि परिचय (i) पालि-पाण्डुलिपियों का सामान्य अध्ययन (ii) पाण्डुलिपि-संग्रहालय (iii) राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन : उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली (iv) बर्मी लिपि परिचय	1	3	16-20
			पालि-पाण्डुलिपि सम्पादन तथा थाई लिपि परिचय (i) पाण्डुलिपि सम्पादन प्रक्रिया एवं महत्त्वपूर्ण नियम व सावधानियाँ (ii) पाण्डुलिपियों अथवा मुद्रित ग्रन्थों का सम्पादन, प्रूफ रीडिंग, चिह्न, प्रूफ संशोधन एवं ग्रन्थ सम्पादन (iii) पालि पाण्डुलिपि प्राप्ति के स्रोत (पुस्तकालय, संग्रहालय, संस्थान, मठ, बुद्धविहार इत्यादि) (iv) पाठ-सम्पादन, पाठ-समालोचन, पाठभेद, पाठदोष,लिप्यन्तरण, लिप्यंकन एवं पाठालोचन की अवधारणा (v) थाई लिपि परिचय	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus